विचार संगम

भारतीय दर्शन, विज्ञान, साहित्य-कला और तकनीकी के विशेष संदर्भ में

सम्पादक
डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

विचार संगम

भारतीय दर्शन, विज्ञान, साहित्य-कला और तकनीकी के विशेष संदर्भ में

सम्पादक :

डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

Ph.D., D.Lit. (Sub.)

निदेशक, कॉम्पिटिशन प्लस ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन,
अजमेर

Books n Books

51/1509, आचमन, वेदविहार,
लोहाखान, अजमेर-305001

प्रकाशक :
पुष्पा शर्मा
Books n Books
51/1509, आचमन, वेदविहार,
लोहाखान, अजमेर-305001
ई-मेल : bnbajmer@gmail.com

संस्करण
प्रथम 2025

ISBN : 978-81-993854-0-5

मूल्य - 400/-

रचना - विचार संगम-भारतीय दर्शन, विज्ञान, साहित्य-कला और तकनीकी के विशेष संदर्भ में

सम्पादक - डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

मुद्रक - श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स, अजमेर

4

माखनलाल चतुर्वेदी के साहित्य में राष्ट्रीयता के तत्व

डॉ. सुनीता जांगिड़
सहायक आचार्य (शिक्षा विभाग)
हुकुमचन्द नोबेल इंस्टीट्यूट ऑफ साईंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

माखनलाल चतुर्वेदी हिंदी साहित्य के ऐसे तेजस्वी कवि थे जिनकी लेखनी में भारत की आत्मा बोलती थी। वे केवल कवि नहीं, बल्कि सच्चे राष्ट्रभक्त, पत्रकार और स्वतंत्रता सेनानी थे। उनका सम्पूर्ण साहित्य भारतीय स्वाधीनता आंदोलन की भावना से ओतप्रोत है।

माखनलाल चतुर्वेदी पर महात्मा गांधी का गहरा प्रभाव था। उन्होंने सत्य, अहिंसा, स्वदेशी और आत्मबल जैसे गांधीवादी आदर्शों को अपने जीवन और लेखन में स्थान दिया। वे 'कर्मवीर' और 'प्रताप' जैसे पत्रों के संपादक रहे, जिनके माध्यम से उन्होंने जनता में राष्ट्रीय चेतना जगाने का कार्य किया।

उनकी प्रसिद्ध कविता 'पुष्प की अभिलाषा' भारतीय देशभक्ति का अमर प्रतीक बन गई —

''मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जाएँ वीर अनेक।''

इस कविता में कवि ने अपने जीवन को मातृभूमि के लिए समर्पित करने की भावना व्यक्त की है। उनके काव्य में हिमालय की गरिमा, गंगा की पवित्रता और भारत की माटी का गौरव गूंजता है।

चतुर्वेदी जी का राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक न होकर सांस्कृतिक और आध्यात्मिक भी था। उन्होंने भारत को भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि जीवंत संस्कृति और एकात्म चेतना के रूप में देखा। उनके काव्य में त्याग, बलिदान, मानवता, और भारतीय अस्मिता का समन्वय मिलता है।

माखनलाल चतुर्वेदी का वैवाहिक जीवन 1900 में ग्यारसी बाई के साथ आरंभ हुआ। 1905 में वे शिक्षक बने और यहीं से उनका संबंध क्रांतिकारी दल से हुआ। 1906 में उन्होंने क्रांति दल की दीक्षा ली और पहली कविता जुरासिक रसिक पत्र,

कानपुर में प्रकाशित हुई। 1908 में 'हिंदी केसरी' की निबंध प्रतियोगिता में वे प्रथम रहे, जिससे उनकी राष्ट्रीय चेतना उजागर हुई।

1913 में उन्होंने अध्यापक पद छोड़कर 'प्रभा' पत्र का संपादन प्रारंभ किया और हिंदी जगत में प्रसिद्ध हुए। इसी वर्ष गणेश शंकर विद्यार्थी ने 'प्रताप' का प्रकाशन शुरू किया। 1916 में लखनऊ कांग्रेस अधिवेशन में उनकी मुलाकात गांधीजी, विद्यार्थीजी और मैथिलीशरण गुप्त से हुई।

गांधीजी पर हिंदी की पहली कविता उन्होंने 1913 में 'प्रभा' में लिखी और 1914 में दूसरी कविता 'प्रताप' में प्रकाशित हुई। 1919 में उन्होंने जबलपुर से 'कर्मवीर' पत्र निकाला, जिसमें राष्ट्रीयता, आत्मगौरव और स्वतंत्रता के स्वर मुखर हुए। असहयोग आंदोलन के कारण उन्हें जेल भी जाना पड़ा।

कर्मवीर के प्रवेशांक में उन्होंने लिखा — "दासता से हमारा मतभेद रहेगा, चाहे वह शरीर की हो या मन की।"

'पुष्प की अभिलाषा' और 'अमर राष्ट्र' जैसी ओजस्वी रचनाओं के रचयिता माखनलाल चतुर्वेदी हिंदी साहित्य के उन महान कवियों में से थे जिनके शब्दों में राष्ट्रीय चेतना और त्याग की भावना झलकती थी। उनके उत्कृष्ट साहित्यिक योगदान के लिए सागर विश्वविद्यालय ने 1959 में उन्हें डी.लिट्. की मानद उपाधि प्रदान की और 1963 में भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया। परंतु जब 1967 में राजभाषा हिंदी पर आघात करने वाला संविधान संशोधन विधेयक आया, तो उन्होंने यह अलंकरण लौटा दिया — यह उनकी अटूट राष्ट्रभक्ति और भाषाभावना का प्रमाण था।

उनकी संपादित पत्रिका 'कर्मवीर' स्वतंत्रता संग्राम के दौर में राष्ट्रीय भावना का शंखनाद करती रही। यह केवल एक पत्र नहीं, बल्कि आंदोलन की वाणी थी जिसने जनता में देशभक्ति का जोश भर दिया। माखनलाल चतुर्वेदी कविता, साहित्य और पत्रकारिता — तीनों को 'मातृवंदना' का माध्यम मानते थे।

कवि बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने उन्हें अपने काव्यादर्श 'एक भारतीय आत्मा' के रूप में पहचाना। वे पत्रकारिता में माधवराव सप्रे और कविता में मैथिलीशरण गुप्त को अपना गुरु मानते थे। उनकी कविताएँ बाद में 'एक भारतीय आत्मा' शीर्षक से प्रकाशित हुईं। उनके संपर्क में उस युग की अनेक राष्ट्रीय विभूतियाँ थीं — लाला लाजपत राय, महात्मा गांधी, मदनमोहन मालवीय, मोतीलाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू, राजेन्द्र प्रसाद, वल्लभभाई पटेल, प्रेमचंद, निराला, दिनकर, राहुल सांकृत्यायन, जयशंकर प्रसाद और अन्य अनेक।

'कर्मवीर' माखनलाल चतुर्वेदी की भीतर की आग और रचनात्मक ऊर्जा का

संगम था। यह केवल एक पत्र नहीं, बल्कि राष्ट्रीय आंदोलन का सशक्त माध्यम था, जिसने जनमानस में स्वतंत्रता और स्वाभिमान की ज्वाला प्रज्वलित की। उनके लेखों में ऐसा ओज था कि पाठकों में गुलामी के विरुद्ध विद्रोह का भाव जाग उठता था। समकालीनों ने लिखा है कि 'कर्मवीर' के लेख पढ़ते समय ऐसा लगता था मानो आदिशक्ति शब्दों के रूप में अवतरित हो रही हो।

माखनलाल जी की पत्रकारिता केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि बौद्धिक और वैचारिक भी थी। उनके लेखों में असहयोग आंदोलन, प्रजातंत्र, खिलाफत, ब्रिटिश दमन नीति, हिन्दू-मुस्लिम एकता, आयुर्वेद, गोवध, शिक्षा, बालविवाह, प्रवासी भारतीयों की स्थिति, राष्ट्रभाषा हिन्दी और किसानों की समस्याओं जैसे अनेक सामाजिक-राजनीतिक विषयों पर गहन विश्लेषण मिलता है। वे केवल समस्या उठाते नहीं थे, बल्कि उसके समाधान की दिशा भी सुझाते थे।

उनकी लेखनी में विचार की स्पष्टता, राष्ट्रप्रेम की ऊष्मा और लोकजागरण की भावना समाहित थी। डॉ. कैलाश नारद के शब्दों में — "जब बीसवीं सदी के दूसरे दशक की हिन्दी पत्रकारिता छायावादी कल्पनाओं में उलझी थी, तब गणेश शंकर विद्यार्थी के बाद माखनलाल चतुर्वेदी ने ही भाषा को क्रांतिवाहक बनाया।"

4 अप्रैल 1925 को खंडवा से 'कर्मवीर' का पुन: प्रकाशन करते समय माखनलाल चतुर्वेदी ने अपने ओजस्वी आह्वान में समाज के सभी वर्गों को एकता, समानता और राष्ट्रीय चेतना के लिए पुकारा। उनका संदेश केवल पत्रकारिता का उद्घोष नहीं, बल्कि सामाजिक समरसता और राष्ट्रनिर्माण का आह्वान था। उन्होंने लिखा— "प्रभु करे सेवा के इस पथ में मुझे अपने दोषों का पता रहे और आडंबर, अभिमान और आकर्षण मुझे पथ से भटका न पावें।" यह वाक्य उनके विनम्र, निष्काम और कर्मनिष्ठ व्यक्तित्व का सजीव परिचय कराता है।

माखनलाल जी ने महात्मा गांधी के असहयोग और हरिजन आंदोलनों से प्रेरित होकर कई लेख और कविताएँ लिखीं। गांधीजी स्वयं उनके योगदान से इतने प्रभावित थे कि 1933 में जब वे हरिजन-दौरे पर बाबई पहुँचे तो उन्होंने कहा — "मैं बाबई इसलिए जा रहा हूँ क्योंकि वह माखनलाल जी का जन्मस्थान है।"

उनकी लेखनी ने युवाओं में देशभक्ति और बलिदान की भावना जगाई। वे मध्य प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष बने, 'संपादक भूषण' की उपाधि प्राप्त की, और 1946 में कराची अधिवेशन में 'साहित्य वाचस्पति' से सम्मानित हुए। सागर विश्वविद्यालय ने 1959 में उन्हें डी.लिट् की मानद उपाधि दी, और भारत सरकार ने 1963 में उन्हें पद्मभूषण से अलंकृत किया। किंतु 1967 में हिन्दी विरोधी विधेयक के विरोध में उन्होंने यह सम्मान लौटा दिया। यह उनके अटूट भाषा-समर्पण और राष्ट्रीय

अस्मिता के प्रति निष्ठा का प्रमाण था।

30 जनवरी 1968 को उनके देहावसान के साथ हिन्दी पत्रकारिता ने अपना एक महान कर्मयोगी खो दिया। वे जीवनभर सत्य, निष्ठा, राष्ट्रप्रेम और हिन्दी भाषा की मयादज़ के प्रहरी बने रहे। सचमुच, माखनलाल चतुवेदज़ी भारतीय पत्रकारिता के आदर्श पुरुष थे, जिनकी लेखनी स्वतंत्र भारत की आत्मा बन गई।

माखनलाल चतुर्वेदी ने यद्यपि महात्मा गांधी के अहिंसक मार्ग को अपनाया, परंतु वे प्रारंभ में क्रांतिकारी विचारधारा से भी गहराई से जुड़े रहे। सशस्त्र संघर्ष का मार्ग उन्होंने छोड़ा जरूर, किंतु क्रांतिकारियों के प्रति उनकी सहानुभूति और सहयोग की भावना जीवनभर बनी रही। उनकी प्रसिद्ध कविता 'अमर राष्ट्र' (1938) में सुधारवाद और समझौतावाद के प्रति अस्वीकार तथा बलिदान की प्रबल भावना का उद्घोष मिलता है। उनकी राष्ट्रीयता का मूल तत्व बलिदान था, जिसे उनके साहित्य में 'बलिदानवादी राष्ट्रीयता' कहा जा सकता है। उनके काव्य का प्रत्येक स्वर त्याग, समर्पण और राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत है। वे राष्ट्र को केवल राजनीतिक सत्ता नहीं, बल्कि एक जीवंत देवता के रूप में देखते थे, जिसके लिए जीवन अर्पण ही सच्ची आराधना थी।

पत्रकारिता के क्षेत्र में 'कर्मवीर' और 'प्रभा' के माध्यम से उन्होंने बलिदान और जनजागरण की भावना को जन-जन तक पहुँचाया। उनकी लेखनी ने मध्यप्रदेश ही नहीं, सम्पूर्ण हिन्दी पत्रकारिता में एक नवचेतना का संचार किया। उनके शब्दों ने विद्रोह में भी संगीत भरा और संघर्ष में भी काव्यात्मक माधुर्य जोड़ा।

1927 के भरतपुर सम्पादक सम्मेलन में माखनलाल चतुर्वेदी ने पत्रकारिता के दायित्व पर अपने दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हुए कहा कि समाचारपत्र केवल ताकत ही नहीं, बल्कि जिम्मेदारी का प्रतीक भी हैं। उनका संदेश था कि बिना जिम्मेदारी के बड़ा होना केवल दिखावा है, और गैर-जिम्मेदार पत्रिका स्वयं और समाज दोनों के लिए हानिकारक बन सकती है।

चतुर्वेदी जी ने पत्रकारिता में अपने प्रवेश की शुरुआत 1907 में खंडवा से की, जब वे शिक्षक थे। उन्होंने हस्तलिखित पत्रिका 'भारतीय विद्यार्थी' निकाली, जिसमें न केवल छात्रों बल्कि प्रौढ़ और साहित्यिक पाठकों के लिए भी आदर्श प्रस्तुत किया गया। 1913 में खंडवा के साहित्यप्रेमी कालूराम गंगराड़े के सहयोग से उन्होंने 'प्रभा' का संपादन प्रारंभ किया और उसी समय 'एक भारतीय आत्मा' के नाम से लिखना शुरू किया। 'प्रभा' शीघ्र ही 'सरस्वती' के समकक्ष हिन्दी पत्रिका के रूप में स्थापित हो गई।

उनकी दूसरी प्रमुख पत्रिका 'कर्मवीर' ने रियासतों के अन्याय, अंग्रेजी दमन

और जनमन की आवाज को प्रमुखता दी। उस समय 'स्वराज्य' उच्चारित करना अपराध माना जाता था, पर चतुर्वेदी जी ने निर्भीकता और बलिदान की भावना से पत्रकारिता की परंपरा स्थापित की। उनके कार्य ने मध्य प्रदेश में हिन्दी पत्रकारिता को नई दिशा और मानक प्रदान किया।

पं. विनय मोहन शर्मा के शब्दों में — ''जिस पत्रिका और पत्र में चतुर्वेदी जी ने हाथ लगाया, वही आगे चलकर आदर्श बन गया। वे अंबिकाप्रसाद वाजपेयी, गणेश शंकर विद्यार्थी और पराड़कर जी की गौरवमयी श्रृंखला की एक महत्वपूर्ण कड़ी हैं।''

माखनलाल चतुर्वेदी हिंदी पत्रकारिता और साहित्य के ऐसे स्तंभ थे जिन्होंने राष्ट्रभक्ति, बलिदान और मातृभूमि के प्रति समर्पण को अपनी लेखनी में जीवित किया। उनकी पत्रिका 'कर्मवीर' नई प्रतिभाओं का मुख्य मंच बनी, जहां बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', सुभद्रा कुमारी चौहान, रमाशंकर शुक्ल, शिवमंगल सिंह 'सुमन', धर्मवीर भारती जैसे कवियों ने पहली बार अपनी कविताएँ प्रकाशित कीं।

उनकी वाक्‌शक्ति और संपादन-कला अद्वितीय थी; महात्मा गांधी तक उनके शब्दों और राष्ट्रप्रेम से प्रभावित हुए। चतुर्वेदी जी की कविताएँ और लेख बलिदान, स्वतंत्रता और दासता के विरोध की भावना से ओतप्रोत हैं। 'पुष्प की अभिलाषा' और अन्य रचनाओं में मातृभूमि के लिए प्राण अर्पित करने की उत्कट भावना स्पष्ट झलकती है।

उनकी पत्रकारिता और साहित्य ने न केवल तत्कालीन समाज में राष्ट्रीय चेतना जगाई, बल्कि भविष्य की कवि-पीढ़ियों को प्रेरणा दी। माखनलाल चतुर्वेदी की लेखनी ने हिन्दी साहित्य और राष्ट्रवादी आंदोलन को एक अमिट पहचान दी।

माखनलाल चतुर्वेदी को राष्ट्रीय कवि के रूप में विशिष्ट स्थान प्राप्त है; उनकी काव्य-ऊर्जा की केंद्रित धुरी राष्ट्रीयता है। प्रेम, अध्यात्म और रहस्यभाव उनके काव्य के अन्य आयाम हैं, पर वे सभी अन्ततः राष्ट्र की ओर प्रवृत्त होकर उसमें विलीन हो जाते हैं। उनके गीतों में बलिदान, समर्पण और मातृभूमि के प्रति अनन्य निष्ठा बार-बार उभरती है — वे भावनाएँ जो पाठक में उच्छवास और कर्म-संकल्प जगाती हैं। चित्रात्मक भाषा (हिमालय, नदियाँ, पर्वत, रक्त-झरना) के माध्यम से उन्होंने राष्ट्र-आघात और मुक्ति संकल्प की तेजस्वी छवियाँ रचीं। उनकी कविताएँ केवल भावोत्तेजक नहीं, बल्कि आह्वान और क्रियाशीलता की प्रेरणा भी देती हैं— युवाओं को बलिदान-पथ पर अग्रसर होने का संदेश।

माखनलाल चतुर्वेदी के लिए तरुणाई केवल भोग-विलास का माध्यम नहीं, बल्कि बलिदान और देशसेवा का प्रतीक थी। उनका दृढ़ मत था कि युवाओं की

सार्थकता मातृभूमि की सेवा और स्वतंत्रता के लिए प्राण अर्पित करने में निहित है। राष्ट्र ही उनका सर्वोच्च देवता था, और उसका कल्याण ही युवाओं के जीवन का सर्वोच्च सौभाग्य।

उनकी कविताएँ जैसे—

"सूली का पथ ही सीखा है, सुविधा सदा बचाता आया,
मैं बलि-पथ का अंगारा हूँ, जीवन-ज्वाल जलाता आया।"

स्पष्ट करती हैं कि उन्होंने जीवन को बलिदान और कर्म के लिए समर्पित किया।

उनकी राष्ट्रीय भावना और राष्ट्रप्रेम की तीव्रता को कलिका ने इस प्रकार व्यक्त किया:

"मैं बलि का गान सुनाती हूँ, प्रभु के पथ की बनकर फकीर,
माँ पर हँस-हँस बलि होने में खिंच हरी रहे मेरी लकीर।"

चतुर्वेदी के विचार में स्वराज्य और स्वतंत्र राष्ट्र की प्राप्ति केवल समझौतों या सतही सुधार से संभव नहीं; इसके लिए संकल्प, आत्मबल और बलिदान अनिवार्य हैं। उनकी कविताएँ युवाओं को जाग्रत करती हैं, उन्हें कठिन मार्ग पर अग्रसर होने, राष्ट्र की सेवा और बलिदान के लिए प्रेरित करती हैं।

माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में त्याग और बलिदान राष्ट्रभक्ति का मूल आधार हैं। उनके अनुसार आदर्श देशभक्ति का अर्थ है अपने स्वार्थ और सुख की परवाह छोड़े बिना मातृभूमि के लिए सर्वस्व अर्पित करना। राष्ट्रप्रेमी अपने प्राणों को हथेली पर रखकर तत्पर रहता है कि कब उसकी पुकार होगी और वह शीश अर्पित करेगा।

उनकी कविता 'पुष्प की अभिलाषा' और अन्य रचनाएँ इस बलिदान की उत्कट भावना का प्रतीक हैं। बलिदान उनके काव्य का केन्द्र-बिन्दु है — प्रत्येक समस्या का समाधान यही है। स्वतंत्रता, त्याग, आत्मसमर्पण और युगानुकूल मानवीय संवेदना उनके काव्य को राष्ट्रीय साहित्य का अपरिहार्य अंग बनाती हैं।

उदाहरणस्वरूप, 18 फरवरी 1922 को बिलासपुर जेल में लिखी गई उनकी कविता में यह भाव प्रकट होता है:

"चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं, प्रेमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ,
मुझे तोड़ लेना वनमाली!
उस पथ पर देना तुम फेंक!
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक।"

माखनलाल चतुर्वेदी के अनुसार राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण शिक्षा का सर्वोच्च

लक्ष्य होना चाहिए। केवल किताबें पढ़ना और परीक्षाओं में सफलता पाना शिक्षा नहीं है; इसके लिए विद्यार्थियों में उत्साह, ऐक्य, उदारता, अनुभव, पवित्र विचार, संतोष, शील, सदाचरण, श्रम, विनय, वात्सल्य, सौजन्यता, करुणा, भक्ति, ध्रुवधीरता, गंभीरता, वीरता और वाक्‌शक्ति जैसे गुणों का विकास आवश्यक है।

उनकी कविताओं और लेखों में यह स्पष्ट है कि देशभक्ति और बलिदान की भावना शिक्षा का अपरिहार्य अंग है। वह युवाओं को राष्ट्र के प्रति सक्रिय, साहसी और समर्पित होने के लिए प्रेरित करते हैं। कविताएँ जैसे—

''मैं बलि का गान सुनाती हूँ, प्रभु के पथ की बनकर फकीर;
माँ पर हँस-हँस बलि होने में, खिंच, हरी रहे मेरी लकीर।'' और
''चलो सजाओ सैन्य, समय की भरपाई के दिन आए हैं।
आज प्राण देने के, युग की तरुणाई के दिन आए हैं।''

यह संदेश देती है कि शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन नहीं, बल्कि राष्ट्र और मातृभूमि के लिए बलिदान करने के लिए तैयार करना है। उनके अनुसार, राष्ट्रीय चेतना और बलिदानी मनोभाव विद्यार्थियों में तब विकसित होंगे जब वे अपने देश की दुर्दशा और न्यायहीनता को समझेंगे और उसके सुधार के लिए समर्पित होंगे।

माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में राष्ट्रीयता और देशप्रेम प्रधान विषय हैं। उनके वीर-गीतों में विजय की भावना से अधिक बलिदान और त्याग की ऊर्जा झलकती है। यह भावना महात्मा गांधी के सत्याग्रह और आत्मबलिदान के विचारों से गहराई से प्रभावित थी।

काव्य में यह दृष्टि स्पष्ट होती है:

''सूली का पथ ही सीखा है, सुविधा सदा बचाता आया,
मैं बलिपथ का अंगारा हूँ, जीवन-ज्वाल जगाता आया।''

उनकी कविताओं में युवाओं को देश के लिए प्राण अर्पित करने, बलिदान की राह चुनने का आह्वान मिलता है:

''पूर दें इनको मेरे शूर! शरीरों से, दे दिये शरीर।
उठो भुजाओं में अजज़्न का, रक्त खौलने दो ऐ मानी,
बल की बलि की धाराओं का, संगम बन जाओ सेनानी।''

इतिहास में राष्ट्रीय चेतना की शुरुआत भारतेन्दु युग में हुई थी, लेकिन उस समय विद्रोह और स्वतंत्रता की गहन भावना प्रखर नहीं थी। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में पराधीनता और विदेशी शासन के अनुभवों ने इसे गहन, सक्रिय और बलिदानी राष्ट्रीय चेतना में बदल दिया।

माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में यह स्पष्ट है कि स्वतंत्रता और देशोन्नति का

मार्ग बलिदान और त्याग के माध्यम से ही संभव है:

"सब तजि गहौ स्वतंत्रता नहि चुप लातैं खाव,
राजा करै सो न्याव है पासा परै सो दाँव।"

बालमुकुन्द गुप्त के शब्दों का हवाला देकर माखनलाल चतुर्वेदी ने देश की दयनीय स्थिति और गुलामी पर गहरी ग्लानि व्यक्त की। उनके काव्य में देशप्रेम केवल भाव-उत्तेजना नहीं, बल्कि तर्कसंगत आह्वान और संगठित सैनिक अनुशासन की माँग भी है यानी उत्सर्ग को प्रेरित करने के साथ अनुशासनात्मक तैयारी भी आवश्यक है।

चतुर्वेदी का संदेश स्पष्ट है: स्वतंत्रता के मार्ग में जो भी विघ्न खड़ा करे, उसकी प्रतिकार करने के लिए हर सच्चा नागरिक—राजनीति, समाज, साहित्य या धर्म के क्षेत्र में पहला प्रहार करने को तैयार रहे। दासता के विरुद्ध उनका मतभेद सर्वव्यापी है — शरीरिक हो या मानसिक, व्यक्तिगत हो या सामाजिक, शासक-शासित के बंधन हों या परिस्थितियाँ, सबका उन्मूलन आवश्यक है।

अन्ततः वे यह भी बताते हैं कि हमारे प्रदेशों ने मातृभूमि की सेवा में अपेक्षित योगदान नहीं दिया; इसलिए जागरण, संगठन और समर्पण ही आज की प्राथमिक आवश्यकता है — बोलो, उठो और देश के बुलावे पर हाजिर रहो।

माखनलाल चतुर्वेदी ने हिन्दी पत्रकारिता को केवल सूचनाओं का माध्यम नहीं, बल्कि स्वतंत्रता-संग्राम का जीवंत शस्त्र बना दिया। उन्होंने अपनी कविता और लेखनी से "योद्धा-मन की भक्ति, वैष्णव-सी लगन और क्रांति का स्वर" दिया। आजादी की इस साधना में उन्होंने बारह बार कारावास और तिरसठ बार घर की तलाशी सहकर भी कलम की लौ को बुझने नहीं दिया। यही तपस्या 'कर्मवीर' जैसे पत्रों की आत्मा बनी, जिसने हिन्दी पत्रकारिता को अग्निमय और साहसी स्वर प्रदान किया।

1920 से 1946 तक का काल हिन्दी पत्रकारिता में क्रांति, बलिदान और संघर्ष की कथा बन गया। उस युग की कविताएँ — जैसे 'बंदी' और 'कोकिल' केवल भाव नहीं, बल्कि ज्वाला थीं।

चतुर्वेदी जी के लिए राष्ट्रीयता का अर्थ केवल प्रेम नहीं, बल्कि समर्पण और बलिदान का संकल्प था। उन्होंने अपने काव्य में यही प्रतिपादित किया कि राष्ट्रसेवा तभी सार्थक है जब उसमें राम और भरत जैसे निष्काम कर्मी हों। यद्यपि समय के साथ सामाजिक परिवर्तनों ने कवि के हृदय में कुछ निराशा के स्वर भी जगाए, फिर भी उनका विश्वास यही रहा कि त्याग, सत्य और प्रेम से ही राष्ट्र का उत्थान संभव है।

माखनलाल चतुर्वेदी ने द्विवेदी-युग में काव्य-लेखन आरम्भ किया, जब हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना आकार ले रही थी। उनकी कविताएँ भाव और भाषा—दोनों

ही दृष्टियों से अत्यंत सशक्त हैं। उनके काव्य में देशभक्ति, त्याग, बलिदान और राष्ट्र-सेवा का अद्भुत संगम दिखाई देता है। 'द्वार बलि का खेल बढ़ भूडोल कर दें' और 'सूली का पथ ही सीखा हूँ, सुविधा सदा बचाता आया' जैसी पंक्तियाँ उनके अदम्य साहस और बलिदान-भावना का परिचय देती हैं।

उनकी कविताओं में वीर-पूजा, बंधनसुख, नि:शस्त्र सेनानी और बलि-पंथी से जैसी रचनाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन रचनाओं में उन्होंने अहिंसा, आत्मबल और त्याग के माध्यम से स्वतंत्रता-संग्राम की भावना को जीवंत किया। गांधीजी के नेतृत्व में चल रहे आंदोलन से प्रेरित होकर उन्होंने राष्ट्र को अपना देवता माना और मातृभूमि की सेवा को सर्वोच्च धर्म समझा।

उनकी कविताओं में केवल क्रांति का आह्वान नहीं, बल्कि अनुशासित, नैतिक और आत्मबल से युक्त स्वतंत्रता की भावना है। उन्होंने युवाओं को जागरूक कर कर्म, त्याग और बलिदान के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। इस प्रकार माखनलाल चतुर्वेदी का काव्य हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय भावना और आत्मबल का प्रतीक बन गया।

माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में मातृभूमि के प्रति गहरा प्रेम, त्याग और बलिदान की भावना अत्यंत प्रबल रूप में अभिव्यक्त हुई है। उनके अनुसार मातृभूमि की स्वामी वही हो सकता है, जो शक्ति-सम्पन्न हो, जो संघर्ष और परिश्रम से जीवन को सार्थक बना सके। उन्होंने स्पष्ट कहा— "मातृभूमि है उसकी, जिसको उठ जीना आता है।" उनके विचार में स्वतंत्रता प्राप्ति का प्रथम साधन शक्ति की साधना है।

भारत की आजादी में बलिदान का जो अमूल्य योगदान रहा, उसका सजीव चित्र उन्होंने अपनी कविताओं में प्रस्तुत किया। "एक पुकार हुई, मूरत पर, उठे सहस्रों सीस चढ़े" जैसी पंक्तियाँ उनके कवि-हृदय में विद्यमान उस बलिदान संस्कृति का उद्घोष हैं, जो स्वतंत्रता संग्राम की आत्मा थी।

उनका साप्ताहिक कर्मवीर स्वतंत्रता चेतना का वाहक बना, जिसने जनमानस में स्वराज्य की भावना जगाई। उनके अनुसार स्वतंत्रता केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि सामाजिक और मानवीय अधिकारों से जुड़ी हुई थी —"भुजाओं को काम, अशिक्षितों को शिक्षा, सभी को जीने का अधिकार।" इस दृष्टि से उनकी स्वतंत्र-कल्पना व्यवहारिक और यथार्थ थी, जिसमें राष्ट्र के सर्वांगीण उत्थान की रूपरेखा निहित थी।

चतुर्वेदी जी केवल कवि ही नहीं, बल्कि कर्मयोगी भी थे। वे मध्यप्रदेश के प्रथम सत्याग्रही नेता बने और गांधीजी के प्रिय वक्ता थे। गांधीजी ने स्वयं कहा था— "हम सब लोग तो बात करते हैं, बोलना तो माखनलालजी ही जानते हैं।" उनके जीवन में युवाओं के लिए त्याग, बलिदान और संघर्ष की प्रेरणा निहित थी— "रस

उसका जिसने सिर सौंपा।''

स्वतंत्रता प्राप्ति के अवसर पर 15 अगस्त 1947 को उन्होंने लिखा— ''चलो, केसरिया पहनकर मनाओ कि आजादी के मूल्यवान पत्थर आज तुम रख रहे हो।'' यह कथन उनकी भावनात्मक देशभक्ति और राष्ट्र के प्रति पूर्ण समर्पण का प्रमाण है। उनके अंतिम भावों में भी मातृभूमि के प्रति अटूट निष्ठा और अविचल प्रेम झलकता है—

''मैं जीता, जीता, जीता हूँ, माता के हाथ स्वराज्य रहे।''

इस प्रकार माखनलाल चतुर्वेदी का सम्पूर्ण काव्य भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की आत्मा बनकर उभरा— जहाँ मातृभूमि के लिए त्याग, बलिदान, कर्म और स्वराज्य ही सर्वोच्च आदर्श हैं।

माखनलाल चतुर्वेदी का कृतित्व बहुआयामी और अद्वितीय था। उनके जीवन और कार्य के तीन प्रमुख आयाम हैं— पत्रकारिता, काव्य और राष्ट्रसेवा। उन्होंने 'प्रभा', 'कर्मवीर' और 'प्रताप' जैसे प्रभावशाली पत्रों का संपादन कर हिन्दी पत्रकारिता को नयी दिशा दी। उनकी पत्रकारिता केवल समाचार लेखन नहीं थी, बल्कि वह एक क्रांतिकारी चेतना का प्रवाह थी जिसने भारतीय जनमानस को स्वतंत्रता, आत्मसम्मान और त्याग के लिए जाग्रत किया।

उनके विचार में राष्ट्र कोई सीमाबद्ध भूखण्ड नहीं, बल्कि एक जीवंत बाग है— ''राष्ट्र तो एक बाग है। उसकी सीमा-रक्षा के लिए सिर सौंपकर बलिदान दिया करते हैं, जिससे संसार में वह भूखण्ड राष्ट्र कहलाने योग्य होता है।'' वे मानते थे कि मातृभूमि तभी गौरवान्वित होती है जब उसके पुत्र उसके लिए अपना सिर अर्पित करने को तत्पर हों— ''वह मातृभूमि तब गर्वीली होती है, जब हम उसकी सेवा के लिए अपना सिर लगा सकें या उतार कर दे सकें।''

स्वतंत्रता संग्राम के एक सेनानी के रूप में उन्होंने त्याग, वीरता और राष्ट्रभक्ति का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। उनके काव्य में बलिदान का भाव, युवाओं को राष्ट्र के लिए समर्पित करने की प्रेरणा और भारतीय आत्मा का आध्यात्मिक रहस्यवाद स्पष्ट झलकता है।

डॉ. देवकीनंदन श्रीवास्तव ने ठीक ही कहा है— ''माखनलाल चतुर्वेदी का व्यक्तित्व रागाविष्ट हृदय की सुकुमार भाव-तरंगिमा और ऊर्जस्वित चेतना की धधकती हुई क्रांति का ज्वालामुखी सँभाले हुए है। उनके काव्य में माधुर्य-भक्ति की कोमलता, सूफियों की आत्मविभोरता, संतों का अल्हड़पन और देशभक्त सेनानियों की मस्ती एक साथ मिलकर लहराती है। उनकी रचनाओं में सामाजिक वेदना, युगान्तरकारी विद्रोह और जीवन की सजीव कल्पनाशीलता का अद्भुत समन्वय है।''

निष्कर्षत: माखनलाल चतुर्वेदी भारतीय राष्ट्रीय चेतना के अमर कवि, सशक्त पत्रकार और सत्याग्रही सेनानी थे। उन्होंने अपने लेखन, पत्रकारिता और काव्य के माध्यम से स्वतंत्रता-संग्राम में जनमानस को जाग्रत किया। उनके काव्य में देशभक्ति, त्याग, बलिदान और आत्मबल की भावना प्रमुख है। उन्होंने युवाओं में मातृभूमि के प्रति समर्पण और वीरता का संचार किया। 'कर्मवीर' और 'प्रभा' जैसे पत्रों के माध्यम से उन्होंने राष्ट्रवाद की ज्वाला प्रज्वलित की। उनके काव्य में गांधीवादी विचारधारा, अहिंसा और सत्य का समन्वय दिखाई देता है।